International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 405-407

मुगलकालीन भारत में नगरीकरण

अशोक कुमार
Lect. in History MA, NET (History), G.SSS Gudhan, Rohtak, Haryana, India

सारांश
''मुगलकालीन भारत में देश की अधिकतर जनसंख्या गांवों में रहती थी। नगरों या कस्बों में रहने वालों की संख्या अपेक्षाकृत रूप से बहुत कम थी किन्तु कम जनसंख्या होते हुए भी नगरों का उस समय के जन–जीवन तथा इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान था। मुगलकाल के नगर व्यापारिक और सामरिक महत्व रखते थे जिसके कारण ये यातायात व संचार के केन्द्र थे। हस्तशिल्प और उद्योगों के केन्द्र होने के कारण अनेक भारतीय नगरों ने यहाँ निर्मित वस्तुओं की विशिष्टता और गुणवत्ता के कारण विदेशों में भी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी । बन्दरगाहों पर अनेक व्यापारिक नगरों का उद्य हुआ सबसे महत्वपूर्ण बात ये नगर राजनीति प्रशासन के केन्द्र बिन्दु के रूप में काम करते थे।मुगलकाल के कई नगर धार्मिक और सांस्कृतिक कारणों से विकास में आए थे। इनमें से कई सूफी संतो के निवास व दरगाह तथा हिन्दू तीर्थ स्थानों के कारण तीर्थ यात्रियों के केन्द्र बिन्दु बने रहे। मुगलकाल के नगर विशाल क्षेत्रफल और जनसंख्या वाले थे।''

मुख्य शब्द : व्यापारिक महत्व, सामरिक महत्व, यातायात व संचार, हस्तशिल्प, बन्दरगाह, सांस्कृतिक, सूफी संत, दरगाह, तीर्थ यात्री।

प्रस्तावना
मुगलकाल में नगर प्रशासिन गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र रहे और सुरक्षा की दृष्टि से राजधानी नगरों को तो चार दिवारी से घेर रखा था जैसे दिल्ली और आगरा। भारत की अधिकत्तर जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में रहने के बावजूद भी नगरों से शिल्प कला, कृषि उत्पाद और पशु–उत्पाद के कारण सम्बन्धित रहती थी। अनेक नगरों की स्थापना मुगल सुबेदारों व बादशाहों के द्वारा की गई थी जो बाद में लोगों की गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र बने। जैसे – कन्नौज व काल्पी के जागीदार दिलेर खाँ ने शाहजहाँ के शासन काल में शाहजहाँपुर नगर, मुजफफर खान –ए–खाना ने 1633 ई0 में मुजफफरनगर, रूस्तम खाँ ने मुरादाबाद[1], मुहम्मद खाँ बंगरा ने फर्रूखाबाद, गाजीउददीन इमाद उल मुल्क ने गाजियाबाद, 1755 ई0 में नजीमुद्दौला ने नजीबाबाद तथा 1775 ई0 में फैजुल्ला खाँ ने रामपुर नगर की स्थापना की।

शोध–प्रविधि
प्रस्तुत शोध–पत्र, ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। शोध–सामग्री को प्रमुख पुस्तकों से संकलित किया गया हैं। वस्तुतः यह शोध पर द्वितीय आकड़ों पर आधारित हैं।

शोध के उद्देश्य
प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित हैं।

मुगलकाल में नगरीकरण की स्थिति से परिचित कराना।
मुगलकाल में नगरों के महत्व को प्रदर्शित करना।
मुगलकाल में नगरों की श्रेणी को प्रदर्शित करना।

मुगलकाल के नगरों को उनके महत्व के आधार पर अलग–अलग श्रेणी में रखा जा सकता हैं, किन्तु इस श्रेणीकरण का मतलब यह नहीं हैं कि नगर जिस श्रेणी में रखा गया हैं उसमें केवल वहीं कार्य होता था। श्रेणीकरण केवल यह बताता हैं कि उस नगर में वह कार्य प्रमुख रूप से सम्पादित होता था परन्तु अन्य कार्य भी नगर में गौण रूप से होते थे। मुगलकालीन नगरों के मुख्य प्रकार निम्नलिखित थेः–

1) राजनीतिक प्रशासिक नगर
ये नगर मुख्य रूप से राजनीति व प्रशासन का केन्द्र बिन्दु होते थे इसलिए इन नगरों का महत्व अपेक्षाकृत अधिक था। मुगल साम्राज्य की राजधानी के रूप में दिल्ली तथा आगरा, अवध की राजधानी के रूप फैजाबाद, उत्तर पश्चिम में लाहौर तथा दक्षिण में हैदराबाद । इसी प्रकार के नगर थे।

2) औद्योगिक –व्यापारिक नगर
व्यापारिक केन्द्र के रूप में इन नगरों का उद्य हुआ था। इनकी प्रसिद्धि का आधार वहां पर स्थापित उद्योग या शिल्प था[2]।अहमदाबाद, पटना, सूरत, लुधियाना इसी प्रकार के नगर थे। अवध के नगर खैराबाद तथा दरियाबाद की प्रसिद्धि का आधार वस्त्र उद्योग था। बयाना को नील उत्पादन के लिए जाना जाता था।

3) धार्मिक संस्कृतिक नगर
धर्म शिक्षा व संस्कृति के केन्द्र के रूप में स्थापित नगरों को इस श्रेणी में रखा जाता हैं। बनारस, मथुरा, उज्जैन इत्यादि इसी प्रकार के नगरों का उदाहरण तथा इन नगरों में अनेक मन्दिर, मस्जिद तथा शिक्षा केन्द्र थे जहाँ लाखों की संख्या में श्रदालुओं का आवागमन लगा रहता था।
मुगलकाल के संदर्भ में धार्मिक नगरों की बात करते समय यह ध्यान में रखना जरूरी हैं कि भारत में ऐसे नगर नहीं थे जिनको पूरी तरह से ईस्लामिक नगर कहा जा सके परन्तु ऐसे नगरों की भी कमी नहीं थी जिनकी अधिकत्तर आबादी मुस्लिम थी तथा जहां के जीवन पर ईस्लामिक संस्कृति की स्पष्ट छाप थी जो इन नगरों को अलग ही पहचान प्रदान करती थी। दिल्ली, आगरा, लखनऊ,इलाहाबाद, लाहौर आदि इसी प्रकार के नगर थे। इन नगरों की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख जी0 आर0 हैम्बली ने इस

प्रकार किया हैं–
1) दुर्गीकृत महल 2) नदी के किनारे बसावट 3) मैदानी क्षेत्र 4) मुस्लिम धार्मिक ईमारतों का बहुतायत में पाया जाना 5) बाजार तथा कारवा सराय होना । यह जरूरी नहीं कि उपयुर्क्त विशेषताएं सभी नगरों में समान रूप से पाई जाए परन्तु अधिकांश को अब भी इन नगरों में देखा जाता हैं।

उपनगरीय बस्तियों का बसना

मुगलकाल में बड़े नगरों की एक प्रमुख विशेषता यह रही हैं कि इस युग के जितने भी परकोटा वाले नगर हैं उन सभी की चारदीवारी के बाहर भी बस्तियां बस गई थी । इस तरह की बस्तियां कई कारणों से बसी एक कारण था कि नगर की जनसंख्या इतनी अधिक हो गई थी लोग नगर के परकोटा से बाहर बसने के लिए मजबूर हो गए थे जैसे दिल्ली व आगरा नगर। दूसरा कारण था नगर के बाहर किसी धार्मिक महत्व के स्थल के होने के कारण इसके इर्द–गिर्द लोगों का बस जाना। दिल्ली में निजामुद्दीन तथा चिराग देलही गांव की बस्तियां तथा लाहौर व कश्मीर गेट के बाहर कदम शरीफ की बस्ती इसी प्रकार आस्तित्व में आई । तीसरा कारण था, कुछ अमीरों तथा मनसबदारों का परकोटा से बाहर स्थाई रूप से पड़ाव डालना शाहजहाँबाद, जयसिंहपुरा, जसवन्तपुरा आदि इसी प्रकार की बस्तियां थी।

मुगलकाल में नगर बसने की प्रक्रिया

मुगलकाल में नगर बसने की प्रक्रिया में दो विशेषताएं देखने को मिलती हैं।

1) मुगल बादशाहों ने नए नगरों को बसाने की बजाए पुराने नगरों को ही विकसित करने की नीति अपनाई । इस युग में सम्राटों द्वारा केवल दो नगरों को नए रूप से बसाने का उल्लेख मिलता हैं एक अकबर द्वारा बसाया गया फतेहपुर सीकरी[3] तथा दूसरा शाहजहाँ द्वारा बसाया गया शाहजहाँनाबाद[4]।
2) इस समय में अधिकांश नए नगरों को जागीरदारों, शक्तिशाली जमीदारें तथा मनसबदारों द्वारा बसाया गया जैसे :– रामपुर, नजीबाबाद, गाजियाबाद, फर्रूखाबाद, मुरादाबाद आदि नगर स्थानीय सरदारों द्वारा बसाए गए हैं।

मुगलकालीन नगरों की जनसंख्या

मुगलकालीन स्त्रोतों से हमें उस समय के नगरों की आबादी संबंधी निश्चित आकड़े प्राप्त नहीं होते, फिर भी आबादी के संबंध में इतिहासकारों द्वारा कुछ अनुमान लगाया गया हैं कि

1) लखनौती में 16वीं शताब्दी के आरम्भ में 40,000 घर थे।
2) अकबर के समय में आगरा तथा फतेहपुर सीकरी लंदन से भी बड़े नगर थे।
3) शाहजहां के समय में दिल्ली पेरिस से कुछ कम था।

तीव्र नगरीकरण के कारण

विदेशी यात्रियों द्वारा की गई टिप्पणी के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि मुगलकाल में तेजी से शहरीकरण हो रहा था तथा नगरों की आबादी बढ़ रही थी। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार अकबर के समय में कस्बों की संख्या 3200 थी इस तीव्र नगरीकरण को कई तत्वों से सहायता मिली ।

1) मुगल सम्राटों ने भारत के एक बड़े भाग में शांति और व्यवस्था को स्थापित किया था। जो किसी भी प्रकार के भौतिक विकास जिसमें नगरीकरण भी शामिल हैं, के लिए जरूरी होती हैं।
2) इस युग में मुगल सम्राटों के प्रोत्साहन के कारण शिल्प व व्यापार को प्रोत्साहन मिला। शिल्प तथा व्यापार की इस उन्नति ने भी नगरीकरण को गति प्रदान की ।
3) अनेक कारणों से ग्रामीण आबादी का प्रवास नगरो में हुआ। जिससे भी नगरीकरण में वृद्धि हुई।

मुगल नगरों के जीवन की दशा

मुगलकाल में नगरों के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी विदेशियों के विवरणों से मिलती हैं। विभिन्न विदेशी यात्री जो मुगलकाल में यहां आए उन्होंने अपने विवरणों में लिखा हैं कि –

1) मुगलकाल के नगरों की स्थपना और विस्तार किसी योजना के अनुसार नहीं किया गया था।
2) नगरों में मकान सामान्यतः निम्नकोटी के थे।
3) नगरों के अन्दर मूलभूत जन सुविधाओं का लगभग अभाव था।
4) नगरों में गरीब तथा अमीर के जीवन–स्तर के मध्य भारी अन्तर था।

मुगलकालीन नगरों की शासन व्यवस्था

हैम्बती के अनुसार प्रशासन की दृष्टि से मुगलनगर उस काल के आधुनिक यूरोपीय नगरों से भिन्न थे। इन नगरों का प्रशासन न तो राजकीय चार्टर से संचालित था और ना ही उनमें नगरपालिका व्यवस्था पाई जाती थी। राज्य का कत्वर्य नगरों मे कर वसूल करने तथा शांति व्यवस्था बनाए रखने तक ही सीमित था। कहीं–कहीं पर बाजार की व्यवस्था एवं जल आपूर्ति का काम भी सरकार अपने हाथ में ले लेती थी। ऐसी स्थिति में नगर अपनी व्यवस्था को स्वयं देखते थे तथा इस व्यवस्था के संचालन में मोहल्ला की पंचायत विशेष भूमिका निभाती थी । कुछ समुद्र तटीय बन्दरगाहों की जिनका आर्थिक महत्व बहुत ज्यादा था तथा विदेशी भी पर्याप्त संख्या में रहते थे, व्यवस्था के लिए राज्य मुतसद्दी[5] नामक अधिकारी नियुक्त करता था ।

सामान्य तौर पर नगर व कस्बों की व्यवस्था के साथ जुड़े राज्य के तीन प्रमुख अधिकारी थे, काजी, मुहतासिब तथा कोतवाल। मुहतासिब का कार्य नैतिक आचरण व नियमों को लागू करना, काजी का कार्य शरियत व न्याय व्यवस्था बनाए रखना तथा कोतवाल[6] नगर का प्रमुख अधिकारी था जो शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा शहर की सम्पूर्ण व्यवस्था को देखने के लिए जिम्मेदार था।

सुदूर दक्षिण के मध्यकालीन नगरों की विशेषताएं

मुगलकालीन दक्षिण नगरों की कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार थी।

1) दक्षिण के नगरों में सामान्यतः प्रत्येक नगर का एक देवी या देवता होता था।
2) जैसे –विजयनगर का विरूपाक्ष[7], कांची की देवी –कामांक्षी[8], मदुरई की देवी–मीनाक्षी इत्यादि।
3) सुदूर दक्षिण में कभी–कभी नगरों की स्थापना मन्दिर के पूरक के रूप में हुई। जैसे वेंकटेश्वर के मन्दिर के पूरक के रूप तिरूपति नगर की स्थापना रामानुज ने की ।
4) सुदूर दक्षिण के नगर जातियों, उपजातियों तथा सम्प्रदायों के मुख्यालयों के रूप में कार्य करते थे।
5) दक्षिण के कई नगर सैनिक केन्द्र के रूप में किलेबन्द नगर के तौर पर आस्तित्व में आए। जिंजी, डिंडीगुल, वेल्लूर आदि इसी प्रकार के नगर थे।

इस प्रकार मुगलकालीन नगर अपनी एक अलग विशेषता लिए थे

लेकिन विदेशी यात्रियों ने इन नगरों में अच्छाईयां कम और बुराईयां अधिक देखी इसलिए उन्होंने वृतांतों में अधिकतर नगरों की आलोचना ही की हैं। फिर भी मुगलकालीन नगर अपने शिल्प कार्य, आकार और व्यापार आदि कार्यों के लिए विश्व प्रसिद्ध थे।

संदर्भ सूचि

1. Prospects of Reigional Economic Cooperation in South Asia with ……. Gordhan Saini, 2011, 225.
2. Census of India, Bareilly A-B(2V), 1981, 1.
3. The Mughal Empire - Part 1, 5, 29.
4. Princes & Painters: In Mughal Delhi, William Dalrymple, Yuthika Sharma, 2013, 1707-1857.
5. The Provincial Government of the Mughals, Parmatma Saran, 1941; 1526-1658:216.
6. Medieval India Quarterly, 5:119.
7. History of India - Hindi, Dr. Malit Malik, 218.
8. Art Shrines of Ancient India, V.K Subramanain, 2003, 30.